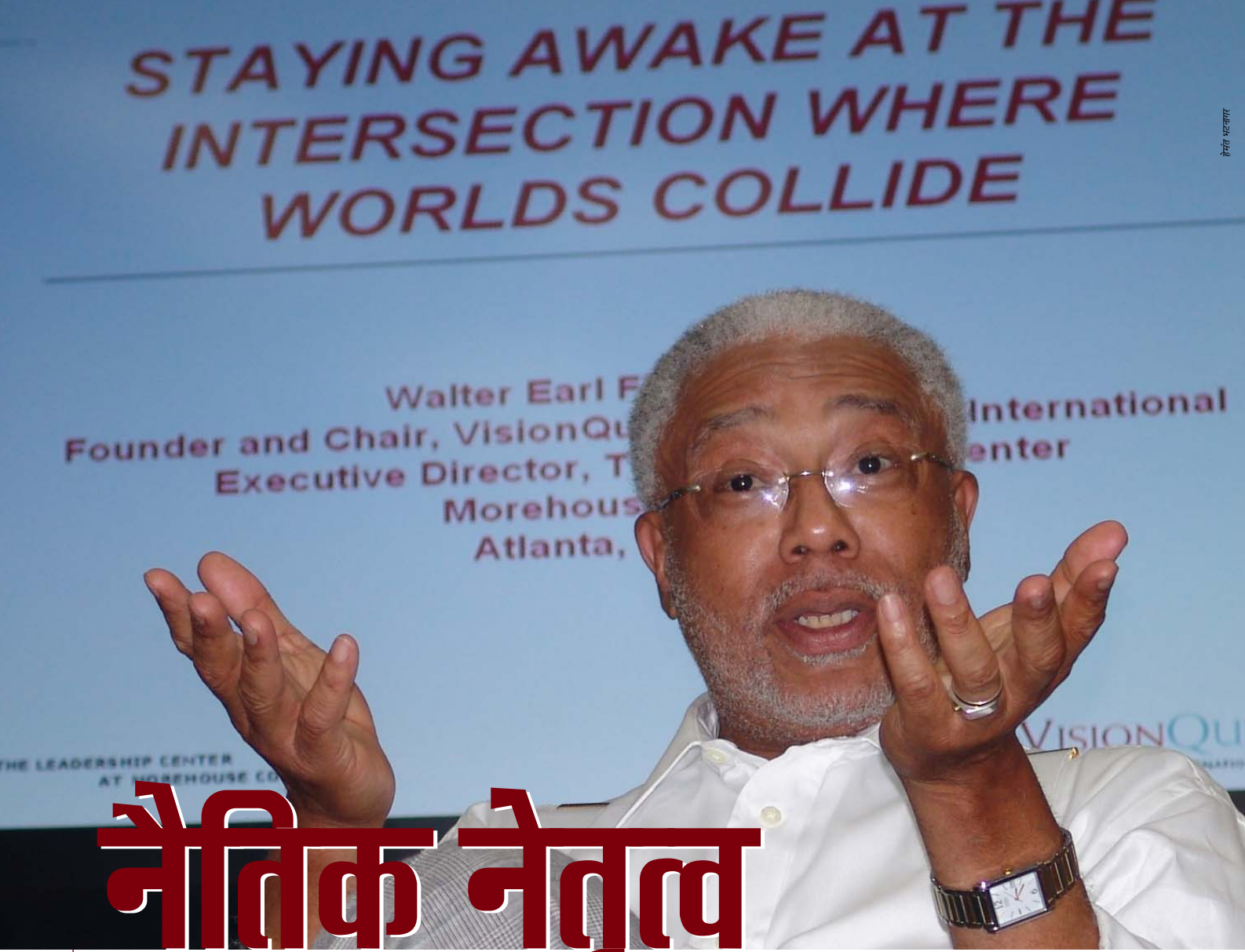

हेमंत पटवारी

नैतिक नेतृत्व

ऋचा वर्मा

बराबरी की ओर बढ़ने का सफर आसान नहीं

वाल्टर अर्ल फ्लूकर मानते हैं कि उबाऊ लोगों के लिए नरक में एक खास जगह आरक्षित है। इसलिए भारतीय छात्रों से नैतिक नेतृत्व पर बातचीत करते हुए अटलांटा, जॉर्जिया के मोरहाउस कॉलेज में लीडरशिप स्टडीज़ के इस प्रोफेसर ने लोककथाओं और यहां तक कि ध्यान का भी सहारा लिया।

लेकिन नैतिक नेतृत्व है क्या? क्या यह कोई ऐसा दार्शनिक क्षेत्र हैं जिसमें प्रवेश करने से अधिकांश युवा कतराएंगे? फ्लूकर मानते हैं कि बात ऐसी ही है और इसलिए बात को आसान बनाने के लिए उन्होंने बीसवीं सदी के अनुरूप ढाली गई एक त्रिनिडाडी लोककथा से बात शुरू की:

एक दिन एंडी चींटे को रोटी का छोटा सा टुकड़ा मिला जिस पर जरा सी जैली लगी थी। वह खुशी-खुशी उसे अपनी बांबी में ले जाने में जुट गया ताकि पूरा कबीला उसका मजा ले सके। लेकिन जीतोड़ कोशिश करने पर भी वह रोटी के टुकड़े को घसीट कर बांबी तक न ले जा सका और खीझ गया। तभी जाने कहां से बब्बा गुबरैला उसकी मदद करने आ गया और उसका 'बोझ हल्का करने के लिए' रोटी के टुकड़े में से एक बड़ा सा गस्सा खा गया। एंडी की समस्या तो क्या सुलझनी थी, वह उदास हो गया और थक भी गया।

नैंसी मकड़ी दूर से सारा माजरा देख रही थी। एंडी को उकसाने के लिए वह बोली कि तुम्हारे लिए रोटी का टुकड़ा अपनी बांबी तक ले जाना सचमुच कठिन है, चलो मैं ही

इसे अपने भूखे बच्चों को खिला दूं। उसने टुकड़े के चारों तरफ जाल बुनना शुरू भी कर दिया। यह देखकर एंडी जोश में आ गया और अपनी पूरी ताकत लगाकर रोटी के टुकड़े को अपनी बांबी तक धकेल ले गया।

फ्लूकर कहते हैं कि इस कहानी के चरित्र एक खास मानसिकता वाले वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, ''इनसे हमारी मुलाकात अपनी स्थानीय संस्कृति में ही नहीं वैश्विक संस्कृति के सन्दर्भों में भी होती है। नैंसी को मैं नैतिक नेता मानता हूं, उसमें जाग्रत होने पर अविश्वसनीय कार्य कर डालने की अविश्वसनीय क्षमता है।''

आदर्श नैतिक नेतृत्व की तरह नैंसी एंडी की चेतना को कोंचती है, वह मानती है कि 'जो मेरा है वह तुम्हारा भी है, हम मिलबांट कर खाएंगे।' उधर बब्बा समाज के आपराधिक वर्ग का प्रतिनिधि है, इसका दर्शन है, ''जो तेरा है वो मेरा है, और मैं अपना माल ले लूंगा। ''

सितम्बर में नई दिल्ली स्थित अमेरिकन सेंटर में फ्लूकर के सत्र में भाग लेने वाली पुनीता रॉय का कहना है, ''मुझे उनके व्याख्यान की अंतर्वस्तु से भी अच्छे उनके उदाहरण लगे।''

पुनीता राय युवाओं के लिए नैतिक नेतृत्व कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं। वह हाल ही में दक्षिण अफ्रीका में ऐसी ही नैतिक नेतृत्व कार्यशाला संचालित कर लौटी हैं। उन्हें लगता है कि भारत में नैतिक नेतृत्व की कमी है। ''एक शून्य है... लेकिन फिर भी ऐसे प्रेरक नेता दिखते ही रहते हैं जिन्होंने अपने समुदाय के सबलीकरण को जीवन समर्पित कर दिया है। प्रकाश आम्टे और उनकी पत्नी मंदाकिनी, मेधा पाटकर... और भी बहुत से अचर्चित नायक... देशभर में फैले हैं। वे सब मिलकर एक ऐसा महत्वपूर्ण समूह रचते हैं जो सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं।''

फ्लूकर ज़ोर देकर कहते हैं कि हालांकि नैतिक नेतृत्व के सामने चुनौती है लेकिन फिर भी उसके लिए गुंजाइश बची है- विश्वभर में लोकतंत्र के लिए निरंतर चल रहे संघर्षों से यह स्पष्ट है।

नई दिल्ली के जामिया मिल्लिया इस्लामिया की अंग्रेजी की छात्रा सायरा मुज्जतबा कहती हैं, ''फ्लूकर की वार्ता ने हमारी आंखें खोल दीं। खासतौर पर इस बात ने कि आज संसार के सामने सबसे बड़ी चुनौती आतंकवाद या वैश्विक तापमान वृद्धि नहीं, जगे रहना है।''

और मोरहाउस में जगे रहने की परम्परा बरकरार है। मार्टिन लूथर किंग, जूनियर यहीं पढ़े थे। वह 1944 में 15 वर्ष की आयु में यहां पढ़ने आए थे और यहीं उनमें शांति और न्याय की पहली चिंगारी का उदय हुआ। यहीं वह मोहनदास कर्मचन्द गांधी और हेनरी डेविड थोरो की शिक्षाओं और विचारों से परिचित हुए। यहां के शिक्षकों के संरक्षण में उनके दर्शन और सिद्धान्त विकसित हुए।

कॉलेज की वेबसाइट (http://www.morehouse.edu/) के अनुसार किंग के अंतिम वर्ष में पहुंचते-पहुंचते स्पष्ट होने लगा था कि वह उस नेता में बदल चुके हैं जो बनना उनकी नियति थी। उस दौर में उन्होंने छात्र पत्रिका 'द मैरून टाइगर' में लिखा ''हमें याद रखना होगा कि बौद्धिकता ही पर्याप्त नहीं। बौद्धिकता और चरित्र- यही सच्ची शिक्षा का लक्ष्य है।''

वर्ष 2006 में अटलांटा के अग्रणी नागरिकों के एक समूह के प्रयासों के कारण हाथ से लिखी टिप्पणियों, टेलिग्रामों और किंग के अप्रकाशित उपदेशों के दस हज़ार अंशों का एक संग्रह नीलाम होने से बच गया और अब कॉलेज में स्थायी रूप से संग्रहीत है।

फिलहाल फ्लूकर मोरहाउस कॉलेज के मार्टिन लूथर किंग, जूनियर संग्रह के अंतरिम निदेशक हैं। वह 1992 से हॉवर्ड थरमैन पेपर्स प्रोजेक्ट के संपादक रहे हैं और मानते हैं कि गांधी और किंग बीसवीं सदी के महानतम नैतिक नेता और अपने देशों के चरित्र को रचने वाली नैतिक परम्पराओं के मूर्त रूप हैं।

वह कहते हैं, ''गांधी और किंग उन महान परम्पराओं के उत्तराधिकारी थे जो नैतिक अन्तर्दृष्टि और मनीषा का आधार रही हैं और जिनसे करूणा से परिपूरित न्याय की भावना पैदा हुई। गांधी ने हिंदू परम्परा से अन्तर्दृष्टि पाई और किंग उस अफ्रीकी-अमेरिकी चर्च परम्परा के वारिस थे जिसके केंद्रीय लक्ष्य समुदाय, करुणा, प्रतिरोध और सामंजस्य हैं।''

फ्लूकर याद दिलाते हैं कि युवा पीढ़ी के लिए किंग और गांधी की यात्राओं या इतिहास के अधिकांश आंदोलनों की तरह नैतिक नेतृत्व भी कोई आसान राह साबित नहीं होने वाला, ''सबसे बड़ी चुनौती चैतन्य बने रहना है।''

वह कहते हैं, ''इसलिए समाज में गंभीर प्रश्न उठने पर उनके समाधान के प्रयास महत्वपूर्ण तो हैं लेकिन नैतिक नेता बातचीत से हल निकालना जानते हैं। ज़रूरी नहीं कि उनके पास हमेशा ही सही उत्तर हों, लेकिन उनके उपाय व्यवहार्य ज़रूर होते हैं। और यही बात लोकतंत्र के भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।''

ज़्यादा जानकारी के लिए:

वाल्टर अर्ल फ्लूकर

http://www.morehouse.edu/centers/leadershipcenter/wefbio.html

बाएं: नई दिल्ली स्थित अमेरिकन सेंटर में नैतिक नेतृत्व के बारे में अपने विचार रखते वाल्टर फ़्लूकर।
नीचे: फ़्लूकर चेन्नई में स्टेला मैरिस कॉलेज, एम.ओ.पी. वैष्णव महिला कॉलेज और लोयोला कॉलेज के विद्यार्थी नेताओं से बातचीत करते हुए।

उषा देवाडुर